एक अतिप्रचलित छंद
दोहा

दोहे की बात चले तो सब से पहले संत 'कबीर' का नाम सामने आ जाता है। संत कबीर, रहीम, तुलसीदास और बाबा फ़रीद जैसे बहोत से संतो ने तथा बहोत से कविओं ने दोहे का प्रयोग किया है। वर्तमान समय में निदा फ़ाज़ली ने भी दोहे का अच्छा प्रयोग किया है।

दोहे दो ही पंक्ति में लिखे जाते हैं। दोहे की एक पंक्ति की कुल २४ मात्रा होती है जिसमें ११वीं और २४वीं मात्रा पर लघुअक्षर को निभाया जाता है तथा २२वीं और २३वीं मात्रा को मिला कर एक गुरुअक्षर को निभाया जाता है। १३वीं मात्रा के बाद यति को निभाया जाता है।

छंदशास्त्र में दोहे की दोनों पंक्तिओं को यति-स्थान से अलग करके चार चरणों का बता कर दोहे का समावेश अर्धसम मात्रिक छंद के प्रकार में किया जाता है। जिन छंदों के चार चरण होते हुए भी इसे दो पंक्ति में ही लिखे जाते हैं, ऐसे छंदों की हरेक पंक्ति को दल कहते हैं तथा ऐसे छंदों को द्विदल प्रकार के छंद कहते हैं। दोहा छंद के विषम चरण की १३ मात्रा और सम चरण की ११ मात्रा मिला कर एक दल (पंक्ति) की कुल २४ मात्रा होती है। दोनों दलों (पंक्तिओं) को मिला कर पूरे दोहे की कुल ४८ मात्रा होती है। दोहे के सभी चरणों की ११वीं मात्रा पर लघुअक्षर को निभाया जाता है तथा सम चरण की अंतिम तीन मात्रा को गाल स्वरूप में ही (अनुक्रम से गुरुअक्षर और लघुअक्षर) निभाया जाता है। दोहे के सम चरण के अंत में प्रास निभाए जाते हैं। दोहे का लगात्मक स्वरूप प्रस्तुत है।

: दोहे की एक पंक्ति का लगात्मक स्वरूप :

गागागागा गालगा, गागागागा गाल

८+५+८+३ = २४

दोहे में अंतिम संधि गाल में गुरुअक्षर के स्थान पर दो लघुअक्षरों का प्रयोग नहीं किया जाता इसलिए गाल संधि एक ही रूप में प्रयुक्त हो सकती है। गालगा संधि में किसी एक या दोनों गुरुअक्षर के स्थान पर दो लघुअक्षरों का भी प्रयोग किया जा सकता है इसलिए गालगा को कुल चार रूप में (गालगा, ललगा, गालल और ललगा) प्रयुक्त किया जा सकता है। अष्टकल संधि गागागागा के कुल ३४ रूप (गागागागा से ले कर ललललललल तक) प्राप्त किये जा सकते हैं। इस प्रकार अष्टकल संधि गागागागा के ३४, गालगा संधि के ४ और गाल

संधि के १ रूपों के प्रयोग से दोहा छंद में एक पंक्ति की रचना के लिए अलग-अलग लघु-गुरु क्रम के कुल ४६२४ विकल्प प्राप्त होते हैं।

गागागागा	गालगा	गागागागा	गाल
३४	४	३४	१
३४ × ४ × ३४ × १ = ४६२४			

अष्टकल संधि के कुल ३४ रूप प्राप्त किये जा सकते हैं कि जिसमें से २५ रूपों में २ चतुष्कलों को अलग किया जा सकता है तथा ९ रूपों में ४थी और ५वीं मात्रा मिल कर एक गुरुअक्षर होने के कारन दूसरे चतुष्कल की पहली मात्रा स्पष्ट रूप से सामने न आ कर दब जाती है इसलिए इन ९ रूपों में २ चतुष्कलों को अलग नहीं किया जा सकता। अष्टकल संधि के इन सभी रूपों में प्रवाहिता का प्रमाण एक-समान हो यह ज़रूरी नहीं। इसलिए छंदशास्त्र में अष्टकल संधि के कुछ रूपों का परोक्ष रूप से निषेध किया गया है। खास करके दो 'ज' गण के प्रयोगवाली अष्टकल संधि लगाललगाल का और जिस अष्टकल संधि की अंतिम ५ मात्रा में लघु-गुरु का क्रम गागाल स्वरूप में हो ऐसी अष्टकल संधि का निषेध किया गया है।

छंदशास्त्र में दोहे के प्रकारों को अलग-अलग लघु-गुरु क्रम के आधार पर वर्गीकृत न करते हुए एक दोहे में प्रयुक्त लघु-गुरु अक्षरों की संख्या के आधार पर ही वर्गीकृत किया गया है। एक दोहे में न्यूनतम २६ अक्षर प्रयुक्त होते हैं कि जिसमें २२ गुरुअक्षरों का और ४ लघुअक्षरों का प्रयोग किया जाता है तथा महत्तम ४८ अक्षर प्रयुक्त होते हैं कि जिसमें सिर्फ़ लघुअक्षरों का ही प्रयोग किया जाता है। इस आधार पर शास्त्रों में २२ गुरुअक्षरों के प्रयोग से ले कर सिर्फ़ लघुअक्षरों के प्रयोग (० गुरुअक्षर के प्रयोग) तक दोहे के कुल २३ प्रकार बताए गए है। यहां पर शास्त्रोक्त बातों को न दोहराते हुए दोहे छंद के ऊपर मैं अपने विचार प्रस्तुत करता हूं।

किसी भी मात्रामेल रचना के पठन या गायन में कुछ जगह पर विशेष ठनकार या आघात का अनुभव किया जा सकता है, उस विशेष ठनकार या आघात को पद्यभार कहते हैं। मात्रामेल रचना में प्रयुक्त संधि के आधार से निश्चित कालांतर पर पद्यभार (विशेष ठनकार या आघात) की पुनरावृत्ति होती रहती है। पद्यभार (विशेष ठनकार या आघात) के स्थान के लिए ताल-स्थान या ताल शब्द का भी प्रयोग होता है, मगर संगीत की परिभाषा में ताल शब्द का अलग अर्थ में प्रयोग होने के कारन हम पद्यभार शब्द का ही प्रयोग करेंगे और वही ज़ियादा उचित है। छंदों में प्रयुक्त किसी भी संधि में दो तरह के पद्यभार पाए जाते हैं, मुख्य पद्यभार और गौण पद्यभार। मुख्य पद्यभार के मुक़ाबले गौण पद्यभार में ठनकार का वज़न थोड़ा कम होता है। छंदों के निरूपण के लिए सिर्फ़ मुख्य पद्यभार को ही ध्यान में लिया जाता है मगर एक गुरुअक्षर के स्थान पर स्पष्ट उच्चारवाले दो लघुअक्षरों का प्रयोग

मुख्य और गौण पद्यभारवाले गुरुअक्षर के स्थान पर नहीं करना चाहिए और इस बात का भी ध्यान रखना चाहिए कि दो से अधिक स्पष्ट उच्चारवाले लघुअक्षर एकसाथ न आएं। ऐसा करने से छंद की प्रवाहिता बढ़ती है। छंदों में संयुक्त उच्चारवाले दो लघुअक्षरों का प्रयोग किसी भी गुरुअक्षर के स्थान पर किया जा सकता है। मुख्य पद्यभार को रेखांकित करके दर्शाया गया है और गौण पद्यभार को नीचे बिंदी करके दर्शाया गया है।

'अनुभव' शब्द का लिखित स्वरूप लललल होता है मगर 'अनुभव' शब्द का उच्चारण 'अनुभव्' प्रकार से किया जाता है इसलिए इस शब्द का उच्चारण के आधार पर स्वरूप ललगा हो जाता है। यहां पर 'अनु' स्पष्ट उच्चारवाले दो लघुअक्षर है और 'भव' संयुक्त उच्चारवाले दो लघुअक्षर है।

'अनुमति' शब्द का लिखित और पठित दोनों स्वरूप लललल ही होता है यानि चार अक्षरवाले इस शब्द में चारों अक्षर स्पष्ट उच्चारवाले लघुअक्षर ही है। यहां पर यह प्रश्न उपस्थित हो सकता है कि अगर एकसाथ दो से अधिक स्पष्ट उच्चारवाले लघुअक्षरों के प्रयोग को वर्जित किया जाए तो 'अनुमति' शब्द का प्रयोग कैसे किया जाए? 'अनुमति' शब्द का उच्चारण 'अनूमती' (लगालगा) स्वरूप में या 'अनूमति' (लगालल) स्वरूप में किया जाए तब भी वह कर्णकटु नहीं लगता इसलिए 'अनुमति' शब्द को लगालगा या लगालल स्वरूप में प्रयुक्त किया जा सकता है। इसी तरह दो से अधिक स्पष्ट उच्चारवाले लघुअक्षर के अन्य कई शब्दों को प्रयुक्त किया जा सकता है।

'दिल' शब्द में संयुक्त उच्चारवाले दो लघुअक्षर प्रयुक्त हुए हैं और 'मति' शब्द में स्पष्ट उच्चारवाले दो लघुअक्षर प्रयुक्त हुए हैं। गागाग़ागा संधि में 'दिल' शब्द का प्रयोग किसी भी गुरुअक्षर के स्थान पर किया जा सकता है जबकि 'मति' शब्द का प्रयोग मुख्य और गौण पद्यभारवाले गुरुअक्षरों को छोड़ कर सिर्फ़ दूसरे और चौथे गुरुअक्षर के स्थान पर ही किया जा सकता है।

अब मैं दोहा छंद की एक पंक्ति के लगात्मक स्वरूप को उसके मुख्य और गौण पद्यभार के साथ दर्शाता हूं।

गा	गा	ग़ा	गा	गा	ल	ग़ा	गा	गा	ग़ा	गा	गा	ल
१	३	५	७	९	११	१२	१४	१६	१८	२०	२२	२४
२	४	६	८	१०		१३	१५	१७	१९	२१	२३	

तर्क-संगत नाम : २(गागाग़ागा+गालग़ागा-गा)-गा

प्रकार : मिश्र-खंडित

कुल मात्रा : २४

यति : १३वीं मात्रा के बाद

मुख्य पद्यभार की मात्रा : १, ९, १४, २२।

अनुक्रम से गागाग़ागा और गालग़ागा संधि के मिश्र स्वरूप (गागाग़ागा गालग़ागा) के अंतिम गुरुअक्षर का लोप करने से प्राप्त स्वरूप (गागाग़ागा गालग़ा) के दो आवर्तनों के प्रयोग से प्राप्त स्वरूप (गागाग़ागा गालग़ा गागाग़ागा गालग़ा) के अंतिम गुरुअक्षर का लोप करने से दोहा छंद प्राप्त होता है।

दोहे में एक गुरुअक्षर के स्थान पर स्पष्ट उच्चारवाले दो लघुअक्षरों का प्रयोग मुख्य और गौण पद्यभारवाले गुरुअक्षर के स्थान पर नहीं करना चाहिए और पूरी रचना में स्पष्ट उच्चारवाले दो से अधिक लघुअक्षर एकसाथ नहीं आने चाहिए। निष्कर्ष यह निकलता है कि एक गुरुअक्षर के स्थान पर स्पष्ट उच्चारवाले दो लघुअक्षरों का प्रयोग दोहे में गागाग़ागा संधि के दूसरे और चौथे गुरुअक्षर के स्थान पर ही करना चाहिए। दोहे में संयुक्त उच्चारवाले दो लघुअक्षरों का प्रयोग दोनों पंक्ति के अंतिम गुरुअक्षर को छोड़ कर किसी भी गुरुअक्षर के स्थान पर किया जा सकता है। दोनों पंक्ति के अंतिम गुरुअक्षर के स्थान पर दो लघुअक्षरों का प्रयोग न करके सिर्फ़ गुरुअक्षर का ही प्रयोग करना चाहिए। दोनों पंक्ति के अंतिम लघुअक्षर के स्थान पर ह्रस्व स्वर या ह्रस्व स्वरयुक्त व्यंजन का प्रयोग किया जाता है मगर जहां तक हो सकें दोनों पंक्ति के अंतिम लघुअक्षर के स्थान पर अकारांत व्यंजन का ही प्रयोग करना चाहिए। ऐसा करने से मात्रिक छंद दोहे का स्वरूप थोड़ा चुस्त हो जाएगा मगर छंद की प्रवाहिता बहोत बढ़ जाएगी। अगर दोहे की दोनों पंक्ति में गाल संधि के साथ-साथ गालग़ा संधि के भी दोनों गुरुअक्षरों के स्थान पर दो लघुअक्षरों का प्रयोग न करके सिर्फ़ गुरुअक्षर का ही प्रयोग किया जाए तो छंद की प्रवाहिता और संगीतात्मकता और भी बढ़ जाएगी।

दोहा में प्रथम अष्टकल संधि गागाग़ागा प्रयुक्त होती है इसलिए एक अष्टकल लय (८ मात्रा की लय) निर्मित हो जाती है और सभी संधि के लिए (चारों संधि के लिए) ८ मात्रा ही प्रयुक्त होती है। लघुअक्षर की १ मात्रा और गुरुअक्षर की २ मात्रा गिनी जाती है। लघुअक्षर को एक ही मात्रा में बोला या गाया जा सकता है मगर गुरुअक्षर को २ से अधिक मात्रा तक भी बोला या गाया जा सकता है। दोनों गागाग़ागा संधि में एक गुरुअक्षर की २ मात्रा के हिसाब से ८ मात्रा पूरी हो जाती है मगर ८ मात्रा की लय को बरक़रार रखने के लिए ५ मात्रा की गालग़ा संधि को भी ८ मात्रा की लय में और ३ मात्रा की गाल संधि को भी ८ मात्रा की लय में विभाजित करना पड़ता है। गालग़ा संधि के पहले गुरुअक्षर को ३ मात्रा में, लघुअक्षर को १ मात्रा में और अंतिम गुरुअक्षर को ४ मात्रा में विभाजित करने से तथा गाल संधि के गुरुअक्षर को ३ मात्रा में और लघुअक्षर को १ मात्रा में विभाजित करके ४ मात्रा को अनक्षर करने से ८ मात्रा की लय को बरक़रार किया जा सकता है। इसीलिए दोहे की दोनों पंक्ति में गाल संधि के साथ-साथ गालग़ा संधि के भी दोनों गुरुअक्षरों के स्थान पर दो लघुअक्षरों का प्रयोग न करके सिर्फ़ गुरुअक्षर का ही प्रयोग किया जाए तो छंद की प्रवाहिता और संगीतात्मकता बढ़ जाती है और इसीलिए दोहा-गायन के लिए ८ मात्रा के ताल कहरवा का ही प्रयोग दिखाई देता है। (देखिए ताल कहरवा का पहला विवरण)

गागाग़ागा संधि के स्थान पर लगालग़ागा और गागाल़गाल संधि का भी प्रयोग किया जा सकता है। गागाग़ागा संधि के स्थान पर गालगालगा संधि का भी प्रयोग दिखाई देता है मगर अष्टकल संधि गालगालगा का दूसरा गुरुअक्षर ४थी और ५वीं मात्रा पर स्थित होने के कारन गौण पद्यभार की मात्रा स्पष्ट रूप से सामने नहीं आ सकती। इसलिए जहां तक हो सकें अष्टकल संधि गागाग़ागा के स्थान पर गालगालगा जैसी अष्टकल संधि के प्रयोग को टालना चाहिए। जिसमें मुख्य और गौण पद्यभार की मात्रा स्पष्ट रूप से सामने न आ सके ऐसी अष्टकल संधि के प्रयोग को (ऐसे लघु-गुरु क्रम की व्यवस्था को) टालना चाहिए तथा इस बात का भी ध्यान रखना चाहिए कि दो से अधिक स्पष्ट उच्चारवाले लघुअक्षर एकसाथ न आएं।

दोहे की दोनों पंक्ति के अंत में प्रास ज़रूरी है। दोहे में दोनों पंक्ति के अंतिम गुरुअक्षर के स्थान पर दीर्घ स्वर या दीर्घ स्वरांत व्यंजन का ही प्रयोग किया जाता है तथा अंतिम लघुअक्षर के स्थान पर अकारांत व्यंजन का ही प्रयोग करना चाहिए। दोनों पंक्ति के अंतिम गुरुअक्षर में समान दीर्घ स्वर ही प्रयुक्त किया जाता है तथा दोनों पंक्ति में अंतिम लघुअक्षर के स्थान पर अकारांत व्यंजन समान ही प्रयुक्त करना चाहिए। पहली पंक्ति में अंतिम गाल के रूप में आन शब्द प्रयुक्त हुआ हो तो दूसरी पंक्ति में अंतिम गाल के रूप में कौन, रैन जैसे शब्दों का प्रयोग न करके जान, मान, दान जैसे शब्दों का ही प्रयोग करना चाहिए। पहली पंक्ति में अंतिम गाल के रूप में आन शब्द प्रयुक्त हुआ हो तो दूसरी पंक्ति में अंतिम

गाल के रूप में फिर से आन शब्द का प्रयोग न करके जान, मान, दान जैसे शब्दों का ही प्रयोग करना चाहिए। पहली पंक्ति में अंतिम गाल के रूप में बात शब्द प्रयुक्त हुआ हो तो दूसरी पंक्ति में अंतिम गाल के रूप में रीत, गीत, काट, साथ, काम, कौन जैसे शब्दों का प्रयोग न करके सात, रात, जात जैसे शब्दों का ही प्रयोग करना चाहिए। ऐसा करने पर प्रास व्यवस्था को बहोत ही अच्छी तरह से निभाया जा सकता है।

दोहा छंद में अष्टकल संधि गागाग़ागा और सप्तकल संधि गालग़ागा प्रयुक्त होती है। अष्टकल संधि के मुख्य और गौण पद्यभार को ८ मात्रा के ताल कहरवा के प्रयोग से तथा सप्तकल संधि के मुख्य और गौण पद्यभार को ७ मात्रा के ताल रूपक या १४ मात्रा के ताल दीपचन्दी के प्रयोग से निश्चित किया जा सकता है। यहां पर यह प्रश्न उपस्थित हो सकता है कि पंचकल संधि गालगा प्रयुक्त हुई है यह स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है तो फिर सप्तकल संधि गालगागा को खंडित करके गालगा संधि प्राप्त करने का प्रयोजन क्या है? ऊपर छंद के लगात्मक स्वरूप में देखा जा सकता है कि गालगा संधि के मुख्य और गौण पद्यभार अनुक्रम से संधि के पहले और अंतिम गुरुअक्षर पर (गालग़ा) स्थित है। १० मात्रा के ताल झपताल के आधार पर पंचकल संधि गालगा के मुख्य और गौण पद्यभार को अनुक्रम से संधि के अंतिम और पहले गुरुअक्षर पर (ग़ालगा) निश्चित किया जा सकता है, संधि के पहले और अंतिम गुरुअक्षर पर (गालग़ा) नहीं। इसी आधार पर यह कहा जा सकता है कि दोहा छंद में अष्टकल संधि गागाग़ागा और सप्तकल संधि गालग़ागा प्रयुक्त होती है।

संगीतबद्ध किये गए दोहे में ज़ियादातर ताल कहरवा का ही प्रयोग दिखाई देता है और वही ज़ियादा उचित है। ताल कहरवा में एक लघुअक्षर के लिए एक मात्रा का और एक गुरुअक्षर के लिए दो या उससे अधिक मात्रा का प्रयोग किया जाता है। अब मैं ताल कहरवा में दोहे की एक पंक्ति का स्वरूप प्रस्तुत करता हूं।

: ताल कहरवा :

(हरेक पंक्ति का पहली मात्रा से आरंभ)

गा	-	गा	-	ग़ा	-	गा	-	गा	-	-	ल	ग़ा	-	-	-
१	२	३	४	५	६	७	८	१	२	३	४	५	६	७	८
×				०				×				०			
गा	-	गा	-	ग़ा	-	गा	-	गा	-	-	ल	-	-	-	-
१	२	३	४	५	६	७	८	१	२	३	४	५	६	७	८
×				०				×				०			

सम (ताल की पहली मात्रा) से नये शब्द की शुरूआत होने पर उसे ताल कहरवा में पहली मात्रा (सम) के बजाय दूसरी मात्रा से भी गाया जा सकता है। इस आधार पर इस छंद की रचना की हरेक पंक्ति का आरंभ ताल कहरवा में दूसरी मात्रा से भी किया जा सकता है। ऐसा करने पर गागाग़ागा संधि के दूसरे गुरुअक्षर को एक ही मात्रा में गाना पड़ता है यानि कि अष्टकल संधि गागाग़ागा को भी सप्तकल संधि गालग़ागा की तरह ही गाना पड़ता है। अगर सभी संधि के पहले गुरुअक्षर से नये शब्द की शुरूआत होती हो और सभी संधि के पहले गुरुअक्षर को गाने की शुरूआत ताल कहरवा में दूसरी मात्रा से की जाए तो ताल कहरवा में दोहे का स्वरूप इस प्रकार होगा।

: ताल कहरवा :

(हरेक पंक्ति का दूसरी मात्रा से आरंभ)

-	गा	-	गा	ग़ा	-	गा	-	-	गा	-	ल	ग़ा	-	-	-
१	२	३	४	५	६	७	८	१	२	३	४	५	६	७	८
×				०				×				०			
-	गा	-	गा	ग़ा	-	गा	-	-	गा	-	ल	-	-	-	-
१	२	३	४	५	६	७	८	१	२	३	४	५	६	७	८
×				०				×				०			

वर्तमान समय में निदा फ़ाज़ली ने भी दोहे का अच्छा प्रयोग किया है इसलिए मैं यहां पर उदाहरण स्वरूप उन्हीं के कुछ दोहे प्रस्तुत करता हूं। इन दोहों को जगजीत सिंघ ने अपनी आवाज़ दी है। मैंने दोहे के ऊपर अपने जो भी विचार प्रस्तुत किये हैं उसे इन दोहे के माध्यम से आसानी से समझा जा सकता है।

(०१)

मैं रोया परदेस में, भीगा मां का प्यार
दुख ने दुख से बात की, बिन चिट्ठी बिन तार

(०२)

छोटा कर के देखिए, जीवन का विस्तार
आंखों भर आकाश है, बाहों भर संसार

(०३)

लेके तन के नाप को, घूमे बस्ती गांव
हर चादर के घेर से, बाहर निकले पांव

(०४)

सब की पूजा एक सी, अलग अलग हर रीत
मस्जिद जाए मौलवी, कोयल गाए गीत

(०५)

पूजा घर में मूरती, मीरा के संग श्याम
जिसकी जितनी चाकरी, उतने उसके दाम

(०६)

नदिया सींचे खेत को, तोता कुतरे आम
सूरज ठेकेदार सा, सब को बांटे काम

(०७)

सातों दिन भगवान के, क्या मंगल क्या पीर
जिस दिन सोए देर तक, भूखा रहे फ़क़ीर

(०८)

अच्छी संगत बैठ कर, संगी बदले रूप
जैसे मिल कर आम से, मीठी हो गई धूप

(०९)

सपना झरना नींद का, जागी आंखें प्यास
पाना खोना खोजना, सांसों का इतिहास

(१०)

चाहे गीता बांचिये, या पढ़िए क़ुरान
मेरा तेरा प्यार ही, हर पुस्तक का ज्ञान

अब मैं उपरोक्त दोहे के गण-विभाजन की सूचि प्रस्तुत करता हूं। सूचि में संयुक्त उच्चारवाले दो लघुअक्षरों को साथ में और स्पष्ट उच्चारवाले लघुअक्षरों को अलग-अलग दर्शाया गया है।

	गा गा ग़ा गा	गा ल ग़ा	गा गा ग़ा गा	गा ल
०१	मैं रो या पर	दे स में	भी गा मां का	प्या र
	दुख ने दुख से	बा त की	बिन चिट् ठी बिन	ता र
०२	छो टा कर के	दे खि ए	जी वन का विस्	ता र
	आं खों भर आ	का श है	बा हों भर सं	सा र
०३	ले के तन के	ना प को	घू मे बस् ती	गां व
	हर चा दर के	घे र से	बा हर निक ले	पां व
०४	सब की पू जा	ए क सी	अ लग अ लग हर	री त
	मस् जिद जा ए	मौ ल वी	को यल गा ए	गी त
०५	पू जा घर में	मू र ती	मी रा के संग	श्या म
	जिस की जित नी	चा क री	उत ने उस के	दा म
०६	नदि या सीं चे	खे त को	तो ता कुत रे	आ म
	सू रज ठे के	दा र सा	सब को बां टे	का म
०७	सा तों दिन भग	वा न के	क्या मं गल क्या	पी र
	जिस दिन सो ए	दे र तक	भू खा र हे फ़	क़ी र
०८	अच् छी सं गत	बै ठ कर	सं गी बद ले	रू प
	जै से मिल कर	आ म से	मी ठी हो गई	धू प
०९	सप ना झर ना	नीं द का	जा गी आं खें	प्या स
	पा ना खो ना	खो ज ना	सां सों का इ ति	हा स
१०	चा हे गी ता	बां चि ये	या पढ़ि ए कुर्	रा न
	मे रा ते रा	प्या र ही	हर पुस् तक का	ज्ञा न

दोहा क्रमांक ४ में लगालग़ागा संधि प्रयुक्त हुई है। अलग अलग हर रीत = लगालग़ागा गाल। दोहा क्रमांक ७ में गागाल़गाल संधि प्रयुक्त हुई है। भूखा रहे फ़क़ीर = गागाल़गाल गाल। दोहा क्रमांक ९ में गागाग़ालल संधि (लल = स्पष्ट उच्चारवाले दो लघुअक्षर) प्रयुक्त हुई है। सांसों का इतिहास = गागाग़ालल गाल। बाक़ी की सभी जगह पर एक गुरुअक्षर के स्थान पर एक गुरुअक्षर का या संयुक्त उच्चारवाले दो लघुअक्षरों का ही प्रयोग हुआ है।

उपरोक्त दोहे के अभ्यास से जो निष्कर्ष निकलता है वो इस प्रकार है कि जिसमें से दोहे के ऊपर मैंने अपने जो विचार प्रस्तुत किये हैं उसे ज्ञात किया जा सकता है।

०१	दोनों पंक्ति में अंतिम संधि गाल से ही प्रास निभाए गए हैं।
०२	दोनों पंक्ति के अंतिम लघुअक्षर (अंतिम संधि गाल के लघुअक्षर) के स्थान पर समान अकारांत व्यंजन का ही प्रयोग किया गया है।
०३	दोनों पंक्ति की अंतिम संधि गाल में गुरुअक्षर के स्थान पर सिर्फ़ गुरुअक्षर का ही प्रयोग किया गया है कि जिसमें दोनों पंक्ति के गुरुअक्षर के दीर्घ स्वर समान है पर व्यंजन समान नहीं है। अंतिम संधि गाल में गुरुअक्षर के स्थान पर स्पष्ट और संयुक्त दोनों प्रकार के उच्चारवाले दो लघुअक्षरों का प्रयोग न करके सिर्फ़ गुरुअक्षर का ही प्रयोग किया गया है।
०४	पद्यभारवाले गुरुअक्षरों के स्थान पर गुरुअक्षर का या संयुक्त उच्चारवाले दो लघुअक्षरों का ही प्रयोग किया गया है। पद्यभारवाले गुरुअक्षरों के स्थान पर स्पष्ट उच्चारवाले दो लघुअक्षरों का प्रयोग नहीं किया गया है।
०५	किसी भी दोहे में एकसाथ दो से अधिक स्पष्ट उच्चारवाले लघुअक्षरों का प्रयोग नहीं किया गया है।

दोहे के विषम चरणों को सम चरण और सम चरणों विषम चरण कर देने से सोरठा छंद बनता है। सोरठा के विषम चरण के अंत में प्रास ज़रूरी है।

: सोरठा की एक पंक्ति का लगात्मक स्वरूप :
गागागागा गाल, गागागागा गालगा ।

दोहा और सोरठा की मात्रा-संख्या की तुल्नामत्क सूचि

	दोहा	सोरठा
विषम चरण की मात्रा संख्या	१३	११
सम चरण की मात्रा संख्या	११	१३

दोहा छंद की प्रवाहिता और संगीतात्मकता के कारन सोरठा के मुक़ाबले दोहा छंद ही ज़ियादा प्रचलित है। अर्धसम प्रकार के छंदों में विषम चरण की मात्रा संख्या के मुक़ाबले सम चरण की मात्रा संख्या कम हो ऐसे छंदों में प्रवाहिता और संगीतात्मकता का प्रमाण अधिक होता है इसीलिए सोरठा के मुक़ाबले दोहा छंद ही ज़ियादा प्रचलित है। प्रास व्यवस्था विषम चरणों के मुक़ाबले सम चरणों में ही अधिक सुंदर लगती है इसलिए भी सोरठा के मुक़ाबले दोहा छंद ही ज़ियादा प्रचलित है।

***

उदय शाह
दादाटट्टू स्ट्रीट (सांई स्ट्रीट),
नवसारी-३९६४४५ (गुजरात)।
Phone : (R) +912637255511 & (M) +919428882632
Email : udayshah_ghazaldhara@yahoo.in
Website : www.udayshahghazal.com